B.A. History (Sub/Gen), Part: I
Paper: I, Unit: V, Date: Lecture No.: 7
10.11.2020

Session: सल्तनत काल में भक्ति आन्दोलन

भारतीय धर्म दर्शन के अनुसार मानव जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति अर्थात जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त होकर ईश्वर में सदा के लिए लीन हो जाना है। जीवन के इस चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति के दो प्रमुख मार्ग बताए गए हैं- ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग। ज्ञान मार्ग जहाँ अध्ययन ध्यान और तप के द्वारा उस परम ज्ञान की प्राप्ति है, जो जिससे मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है जबकि भक्ति मार्ग, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, ईश्वर के समक्ष पूर्ण समर्पण तथा अटूट आस्था की माँग करता है, जो जप, तप, भजन, कीर्तन और साधना के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। भारत के इतिहास में कई बार भक्ति मार्ग तरंगित हुआ और भक्ति आन्दोलन के दौर आते रहे। प्राचीन भारत में भक्ति आन्दोलन का पहला चरण छठी शताब्दी ई०पू० में प्रारंभ हुआ, जिसका चरमोत्कर्ष गुप्त काल में हुआ। इसकी कई धाराएँ थीं, जो विशिष्ट धार्मिक पंथ या मत के रूप में चलीं। इनमें वैष्णव, शैव और शाक्त धर्म उल्लेखनीय हैं। पूर्व मध्यकाल में भक्ति आन्दोलन का दूसरा दौर शुरू हुआ। जिसका चरम विकास सल्तनत काल में हुआ। प्राचीन भक्ति आन्दोलन का स्वरूप सामान्यतः ब्राह्मणवादी था। बौद्ध धर्म को छोड़कर बाकी धार्मिक मत पारम्परिक साकार (सगुण) ईश्वर की सत्ता में विश्वास करते थे और चतुर्वर्ण एवं जाति व्यवस्था की परिधि में भक्ति मार्ग का अवलम्बन करते थे। स्वभाविक रूप से प्राचीन भक्ति आन्दोलन के दायरे से शूद्र तथा अस्पृश्य जातियाँ बाहर थीं। पूर्व मध्यकाल में तंत्रवाद ने शूद्रों तथा स्त्रियों को आध्यात्मिक पद का उपहार दिया तो सल्तनत काल में निर्गुण भक्ति आन्दोलन का प्रादुर्भाव निम्न जातियों के बीच से हुआ, जो एकेश्वरवाद और निराकार ब्रह्म में विश्वास करते थे। इस प्रकार सल्तनत काल में भक्ति आन्दोलन का क्षेत्र ही व्यापक नहीं हुआ, अपितु पंथ एवं स्वरूप में विविधता आयी, जिसने आन्दोलन की धार को तेज कर इसके सामाजिक आधार को अतीव विस्तार दिया।

सल्तनत काल में भक्ति आन्दोलन की इस जनप्रियता एवं उफान के कई कारण थे। मुस्लिम आक्रान्ताओं और बाद में शासकों ने बड़े पैमाने पर मन्दिरों एवं मूर्तियों का विध्वंश किया और ~~बाद में~~ शासकों जबरिया धर्म परिवर्तन के द्वारा भारत में बड़े पैमाने पर इस्लाम का प्रसार किया। उन्होंने हिन्दू शिक्षण संस्थानों को एक-एक कर नष्ट कर डाला। इस परिस्थिति में ज्ञान मार्ग से ईश्वर का सान्निध्य और अपने धार्मिक विश्वासों के अनुरूप अनुष्ठान के लिए खुला व्यवहार संभव नहीं था। ऐसे में मोक्ष के लिए भक्ति मार्ग का अवलम्बन सरल तथा सुगम था, जिसके लिए मन्दिरों के निर्माण और बड़े-बड़े मठों तथा धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजन की जरूरत नहीं थी। फिर प्राचीन तथा प्रारम्भिक मध्य काल में धर्म के दरवाजे सामाजिक पद सोपान में निम्न जातियों के लिए बन्द थे, जिनके धर्मान्तरण की संभावना प्रबल हो गई थी, जिसके लिए इस्लाम ने अपने दरवाजे खोल दिए थे। इस परिस्थिति में हिन्दू समाज को विखंडन तथा इस्लामी तलवार से बचाव के लिए ऐसे आन्दोलन की आवश्यकता थी जो इन दोनों समस्याओं के बीच मध्यम मार्ग का अवलम्बन करते हुए समाज के विखंडन और इस्लामी प्रहार दोनों से भी बचा सके। इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि सल्तनत काल में जहाँ हिन्दू समाज में भक्ति आन्दोलन का तीव्र प्रसार हुआ, वहीं मुस्लिम समाज में सूफी आन्दोलन का विकास हुआ, जो तलवार नहीं, अपितु प्रेम तथा भाईचारे के भाव से हिन्दू समाज को जीत लेना चाहता था। भक्ति आन्दोलन के दोनों धाराओं, सगुण तथा निर्गुण धारा का अलग-अलग विवेचन अपेक्षित होगा ताकि आन्दोलन के स्वरूप, विस्तार और प्रभाव को आसानी से समझा जा सके।

(क) सगुण भक्ति आन्दोलन

सगुण भक्ति आन्दोलन के तहत पारम्परिक वैष्णव, शैव, शाक्त और तंत्रवाद जैसे धार्मिक पंथों को परिगणित किया जाता है। वैष्णव मत का स्रोत भागवतपुराण है, इसलिए इसे भागवत धर्म भी कहा जाता है। इस मत के अनुयायी विष्णु अथवा उनके दशावतारों की पूजा-आराधना करते हैं। वैष्णव मत सल्तनत काल में क्षेत्रीय विविधताओं के साथ लोकप्रिय हुआ। पूर्वी भारत में जयदेव, चंडीदास और विद्यापति ने अपनी अमर रचनाओं से वैष्णव मतावलम्बियों को अपने आराध्य को प्रसन्न करने के लिए गीतों-भजनों का भंडार दिया। चैतन्य ने इन गीतों को नाच गाकर बंगाल में वैष्णव भक्ति की रसधारा बहा दी। लोगों ने उन्हें कृष्ण का अवतार मान महाप्रभु की उपाधि प्रदान कर दी। उन्होंने एक सीमा तक लिंग और जाति भेद को समाप्त करने का प्रयास किया। चैतन्य महाप्रभु से पहले वैष्णव मत के अन्दर कृष्ण भक्ति का प्रवर्तन शंकरदेव ने किया था। और ब्राह्मण परिवार में जन्मे शंकर देव ने कृष्ण भक्ति प्रेरणा दक्षिण भारत में ग्रहण की थी, जिसे उन्होंने नृत्य, गायन और प्रवचन के माध्यम से पूर्वी भारत में प्रसारित किया।

मध्य गंगाघाटी में वैष्णव धर्म का प्रवर्तन दक्षिण भारतीय रामानन्द ने किया था, जो बनारस आकर बस गए थे। चैतन्य और शंकरदेव के विपरीत इनके आराध्य राम थे। अतः इनके द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय को रामानंदी कहा जाता है। उन्होंने वाल्मिकी की रामकथा को जन भाषा में प्रचारित किया जिसका समाज के निम्न वर्ग पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ा। बनारस रामानन्दियों का केन्द्र बन गया। सगुण भक्ति के रामानन्द एकेश्वरवाद में विश्वास करते थे जिसका निर्गुण भक्ति के सन्तों पर भी पड़ा। कबीर इसके सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं, रामानन्द जिसके आदि गुरु थे। रामानन्दी सम्प्रदाय पन्द्रहवीं सदी के पूर्वार्द्ध में जन आन्दोलन के रूप में परिणत हो गया और कहा जाता है कि रामानन्द ने मध्य गंगा घाटी में इस्लामी प्रचार की तीव्र धारा को रोक दिया। रामानन्द के बाद मध्य गंगाघाटी ने वैष्णव मत को कृष्ण भक्ति से सराबोर करने का श्रेय वल्लभाचार्य को दिया जाता है जो रामानन्द की तरह दक्षिण भारतीय थे और बनारस को अपने आन्दोलन का केन्द्र बनाया था। कृष्ण भक्ति के अमर गायक सूरदास इनके परम भक्त थे। कृष्ण भक्ति के दूसरे प्रसिद्ध कवि रसखान पर भी इनके प्रभाव से इन्कार नहीं किया जा सकता।

ख. निर्गुण भक्ति आन्दोलन

निर्गुण भक्ति आन्दोलन की निराकार एकेश्वरवाद में विश्वास करता था। सगुण भक्ति में तो भजन-कीर्तन के अलावे कई कर्मकाण्डों का प्रचलन था, परन्तु निर्गुण भक्ति का साधन भजन कीर्तन मात्र था। आवश्यकता मात्र इस बात की थी कि शुद्ध मन तथा पवित्र चरित्र के साथ ईश्वर का स्मरण किया जाय। यह आन्दोलन हर प्रकार के पाखंड आडम्बर, कर्मकांड तथा रहस्यवाद का विरोध करता था। वस्तुतः निर्गुण भक्ति आन्दोलन ब्राह्मणवाद की परिधि से बाहर पैदा हुआ, किन्तु इसने तत्कालीन ब्राह्मणवादी पाखंड पर गहरा चोट भी किया। निर्गुण सन्तों में कबीर, नानक, दादू आदि प्रमुख थे। इन सन्तों ने अलग-अलग निर्गुण पंथों का प्रवर्तन किया। इनका सामाजिक आधार निम्नवर्गीय था। नाथ पंथ को भी निर्गुण भक्ति आन्दोलन की कोटि में रखा जाता है जिसे बौद्ध सहजयान धर्म का रूपान्तर पंथ माना जा सकता है। गोरखनाथ ने इस पंथ का प्रवर्तन किया, जिसे मत्स्येन्द्रनाथ ने लोकप्रिय बनाया। नाथ पंथ का मुख्यालय गोरखपुर रहा है।

सल्तनतकालीन भक्ति आन्दोलन ने हिन्दू समाज में समरसता का संचार किया और समाज के निम्नवर्गों के लिए धर्म का कपाट खोल दिया, जो सदियों से बंद थे। भक्ति आन्दोलन ने उस समय हिन्दू धर्म तथा समाज की रक्षा की, जब इस पर प्रखर-इस्लामी प्रहार हो रहा था। इसने हिन्दू और मुस्लिम समाजों के बीच खड़ी मजबूत दीवार में ऐसा बड़ा छेद बनाया, जिससे शांतिपूर्ण सह अस्तित्व, सहिष्णुता तथा भाईचारे की बयार दोनों ओर बहने लगी। भक्ति आन्दोलन एक प्रकार का जन आन्दोलन था, जिसके परिणामस्वरूप भारत की क्षेत्रीय भाषाओं का अभूतपूर्व विकास हुआ। विद्यापति, मीरा, सूरदास, तुलसीदास, नरसी मेहता, कबीर, नानक, दादू आदि ने क्षेत्रीय भाषा साहित्य के उन्नयन में ऐतिहासिक योगदान दिया। इस प्रकार सल्तनतकालीन भक्ति आन्दोलन ने तत्कालीन ऐतिहासिक आध्यात्मिक आवश्यकताओं के अनुरूप भक्ति प्रवाह का मार्ग प्रशस्त किया।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर